"और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों का पालन करेगा वह बड़ी सफलता प्राप्त करेगा।"

समाज सुधार प्रकाशण श्रंखला 12

इस्लाम
और बेटियों की परवरिश

इस्लाम ने बेटियों के साथ अच्छे व्यवहार को माता-पिता के लिये अल्लाह की दया और स्वर्ग की प्राप्ति का माध्यम बताया है

मौलाना अरशद मदनी
अध्यक्ष, जमीअत उलमा-ए-हिन्द

प्रकाशक
जमीअत उलमा-ए-हिन्द
1-बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-2

इस्लाम और बेटियों की परवरिश

इस्लाम ने बेटियों के साथ अच्छे व्यवहार को माता-पिता के लिये अल्लाह की दया और स्वर्ग की प्राप्ति का माध्यम बताया है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ أَجْمَعِيْنَ.

आम तौर पर लोगों का स्वभाव यही है कि बेटे का जन्म माता-पिता दोनों के लिये और विशेषकर पिता के लिये अधिक प्रसन्नता का कारण होता है, इसलिये बेटे के जन्म पर उत्सव का वातावरण होता है और 'अक़ीक़ा' (मुण्डन एवं नामकरण संस्कार) के नाम पर बड़ी बड़ी दावतें होती हैं, सामान्य रूप से हमारे समाज की छवि ऐसी ही है। जबकि बेटी के जन्म पर यह वातावरण नज़र नहीं आता, मगर इस्लाम से पहले अरब के लोग इस सिलसिले में बेटी के जन्म पर कुछ अधिक ही बर्बता पूर्ण कार्य करते थे।

क़ुरआन इसका चित्रण सूरह नंबर 16 आयत नंबर 58-59 में इस प्रकार से प्रस्तुत करता है:-

﴿وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِالْأُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيْمٌ. يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ أَيُمْسِكُهٗ

عَلٰى هُوْنٍ أَمْ يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ أَلَا سَاءَ مَا يَحْكُمُوْنَ﴾.

(سورة النحل: ٥٨ . ٥٩)

''और जब उनमें से किसी को बेटी की सूचना दी जाती है तो दिन भर उसका मुंह काला रहता है और दिल ही दिल में घुटता रहता है, जिस चीज़ की उसको सूचना दी गई है उसकी बुराई के कारण लोगों से छिपता फिरता है, उसको छोड़ दे अपमान स्वीकार करते हुए या उसको मिट्टी में दाब दे, खूब सुन लो वह लोग बुरा फ़ैसला करते हैं।'' (सूरत नहल 58-59)

इस आयत से मालूम हुआ कि अरब के लोग अपने घर में बेटी के जन्म को इतना बुरा समझते थे कि अपमान के कारण लोगों से छिपते फिरते थे और इस सोच में पड़ जाते थे कि बेटी पैदा होने से जो मेरा अपमान हुआ है उस पर धीरज रखूं या लड़की ही को ज़िंदा ज़मीन में दफ़्न कर के पीछा छुड़ाऊं, क़ुरआन कहता है कि बेटी के जन्म को दुनिया में अपने लिये अपमान समझने का फ़ैसला बुरा फ़ैसला है।

इसलिये घर में बेटी के जन्म को मुसीबत और अपमान समझना उचित नहीं, यह अल्लाह की तौहीद (अद्वैतवाद) का इनकार करने वालों का काम है, कुछ आलिमों ने लिखा है कि अगर घर में बेटी पैदा हो तो अधिक प्रसन्नता का प्रदर्शन करना चाहिये ताकि अल्लाह को एक न मानने वाले अज्ञानता-युग के लोगों के गलत पक्ष का विरोध हो जाए।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसलम के एक सहाबी (मित्र) हज़रत वासला बिन असक़ा कहते हैं कि वह औरत आशीर्वाद योग्य और भाग्यवान होती है जिसकी पहली औलाद बेटी हो। (दैलमी)

सूरह नंबर 81 आयत नंबर 8-9 में अल्लाह क़यामत के दिन की स्थिति बताते हुए फ़रमाते हैं कि:

﴿وَإِذَا الْمَوْؤُدَةُ سُئِلَتْ بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ﴾.

(سورة التكوير: ٨ . ٩)

''जिस दिन ज़मीन में जीवित ही दफ़्न की गई बेटी से पूछा जाएगा कि वह किस गुनाह पर क़त्ल की गई थी।''

(सूरह तकवीर 8-9)

अर्थात यह न समझना कि हमारी औलाद थी, हमें उस पर पूर्ण अधिकार है, हम जैसे चाहें उस पर अत्याचार करें, तो भलीभांति समझ लो कि औलाद होने के कारण उस निर्दोष बच्ची पर यह अत्याचार और गंभीर हो जाएगा और क़यामत के दिन यह बेटी जिसको निर्दयी बाप ने जीवित ही गाड़ दिया था ज़ालिम बाप का नाम लेकर अपनी मज़लूमियत की कहानी सुनाएगी।

इस्लाम ने दुनिया में आकर जहां और बहुत सी चीज़ों का उनमोलन किया है वहीं इस अत्याचार को जड़ से उखाड़ कर फेंक दिया और बेटियों के साथ अच्छे व्यवहार को माता-पिता के लिये अल्लाह की दया और स्वर्ग की प्राप्ति का माध्यम बताया है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कई बार उपरोक्त अत्याचार के विरुद्ध मुसलमानों को बेटियों के साथ अच्छे व्यवहार पर ज़ोर दिया है।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि ''जिस व्यक्ति की तीन बेटियां या तीन बहनें हैं या दो बेटियां या दो बहनें हैं, अगर उसने उनके साथ अच्छा व्यवहार किया और उनके अधिकार का पालन करने में अल्लाह से डरा तो उसके लिये स्वर्ग है।''

अच्छे व्यवहार और अल्लाह से डरने का अर्थ यह है कि शुरू से अंत तक उनकी सभी आवश्यकताओं को पूरा करता रहा जिसमें पालन-पोषन, पहनना-ओढ़ना, खाना-पीना, पढ़ना-लिखना, विवाह, बल्कि विवाह के बाद भी अति दयालू पिता की भांति

लेनदेन भी करता रहे और ख़ुदा से डरता रहे अर्थात हर समय यह सोचता रहे कि अल्लाह ने उनके अधिकार मेरे ऊपर रखे हैं, अगर मेरी ओर से कोई कमी हुई तो मृत्यु के बाद महशर के मैदान में मुझसे पूछा जाएगा और वहां मेरी पकड़ होगी तो अल्लाह उसके गुनाहों को बख़्श देगा और स्वर्ग प्रदान करेगा। (तिरमिज़ी व शअबुल ईमान)

हज़रत आईशा सिद्दीक़ा रजियल्लाहु अनहा कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि "जो व्यक्ति बेटियों की ओर से कुछ परीक्षा में पड़ गया लेकिन उसने धीरज से काम लिया तो यह बेटियों क़यामत के दिन उसके लिये नरक से सुरक्षा बन जाएंगी।" (सुनन अलबैहक़ी)

यहां यह बात समझनी चाहिये कि क़यामत के दिन आदमी के लिये स्वर्ग या नरक का निर्णय अच्छे या बुरे कर्म के आधार पर नहीं होगा बल्कि कार्य के भार पर होगा। क़ुरआन शरीफ़ में कई जगह उसको बताया गया है, अब इसको देखते हुए इस हदीस का अर्थ यह होगा कि बेटियों से सम्बंधित परीक्षा पर धीरज से काम लेना अल्लाह के यहां इतना भारी कार्य है जो असंख्य गुनाहों के मुक़ाबले में बहुत भारी साबित होगा और दूसरे बहुत से गुनाह उसके सामने हल्के हो जाऐंगे।

इसी प्रकार की अन्य घटना हज़रत आईशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाह अनहा बयान करती हैं कि एक दिन मेरे पास एक महिला आई, उसके साथ उसकी दो बेटियों भी थीं, वह महिला अपनी ग़रीबी का उल्लेख करने लगी और मुझसे कुछ सहायता मांगी, संयोग ऐसा था कि मेरे घर में एक खजूर के अतिरिक्त कुछ नहीं था, मैंने वही खजूर उसको दे दी और महिला ने उस खजूर के दो टुकड़े कर के एक टुकड़ा एक बेटी को और एक टुकड़ा दूसरी बेटी को दे दिया और उठकर चली गई। मुझे उस माँ के प्रेम पर

आश्चर्य हुआ कि उसने अपने मुक़ाबले में अपनी बेटियों को वरीयता दे दी। वह गई और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर में तशरीफ़ ले आए तो मैंने आश्चर्य प्रकट करते हुए उस घटना को आपसे बयान किया। आपने फ़रमाया ''जो व्यक्ति बेटियों की ओर से परीक्षा में पड़ गया तो बेटियों क़यामत के दिन उसके लिये नरक की आग के सामने दीवार और सुरक्षा बन जाएंगी।'' (सुनन तिरमिज़ी)

इसी तरह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसलम के विशेष सेवक हज़रत अनस कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ''जिस व्यक्ति ने दो बेटियों की आवश्यकताओं को पूरा किया (अर्थात जन्म से लेकर जवानी, शादी ब्याह बल्कि मृत्यु तक उनकी आवश्यकताओं को पूरा करता रहा) तो मैं और वह स्वर्ग में इस प्रकार से दाखिल होंगे जैसे हाथ की बीच वाली उंगली और उसके बराबर वाली उंगली'' अर्थात मैं और वह स्वर्ग में साथ साथ रहेंगे। (सही मुस्लिम)

इस से यह पता चलता है कि बेटियों के साथ अच्छा व्यवहार अल्लाह तआ़ला को इतना प्रिय है कि उसके मुक़ाबले में गुनाहों के ढेर भी क़यामत के दिन हल्के पड़ जाऐंगे और क्षमा कर दिये जाएंगे। बेटियों के साथ अच्छा मामला और जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने में बेटों को बेटियों पर वरीयता न देना नरक से दूरी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकट स्वर्ग में रहने का माध्यम है।

हमारे देश में विशेष रूप से बेटी को बोझ समझा जाता है, ऐसे घराने भी देखे गए हैं कि अगर बेटी पैदा हो गई तो सब बड़ी बूढ़ी औरतें रोने और मातम करने बैठ गईं जिसका असल कारण वास्तव में हमारे समाज की ख़राबी है क्योंकि ग़ैर इस्लामी रीति रिवाज ने हमें क़ुरआन और हदीस की शिक्षाओं से दूर कर दिया

है। तिलक की रस्म पूर्ण रूप से ग़ैर इस्लामी रस्म है। हमारे समाज में विभिन्न नामों से इस प्रकार की रस्में प्रचलित हो गई हैं कि लड़के वाला लड़की वाले से अपनी मांगों मनवाए बिना शादी नहीं करता। जो लोग ग़रीबी के कारण बेशर्म लड़के की मांग को पूरी नहीं कर पाते उनकी बेटियां घरों में बैठी हैं, उनके रिश्ते नहीं आते, पूरे समाज में यह बीमारी नासूर की तरह फैली हुई है यहां तक कि धार्मिक परविार भी इस बीमारी का शिकार हैं। अपने बच्चों की शादियां बिना तिलक लिये नहीं करते, बेटियों के सिलसिले में खर्च की यह अधिकता जो माता-पिता के लिये बेटी के जन्म के बाद ही से ह्रदय विदारक बन जाती है, वास्तव में बेटियों के जन्म को मुसीबत समझने का मूल कारण है लेकिन जिस मुसलमान का क़ुरआन व हदीस पर ईमान है, उसको हमेशा अल्लाह और उसके सच्चे रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इन आदशों और हदीसों को अपने सामने रखना चाहिये और अपने परिवार और अपने जीवन को ग़ैर इस्लामी रीति रिवाज और मानसिकता से मुक्त रखना चाहिये।

हमारे देश में कुछ लोग इस प्रकार की मानसिकता भी रखते हैं कि अगर बेटी की शादी की गई और उसके पति की किसी दुर्घना या बीमारी में मृत्यु हो गई या पति-पतनी के सम्बंधों में खराबी हो गई और बेटी अपने माता-पिता के घर आगई तो यह उस लड़की का अभिशाप और दुर्भाग्य है। कुछ लोग ऐसे भी देखे गए हैं कि उन बच्चियों के माता-पिता अपने घर से निकाल देते हैं और अपनी जवान बेटी को किसी धार्मिक स्थल पर छोड़ देते हैं। माता-पिता के इस व्यवहार से उनकी जवानी दूसरे लोगों की हवस का शिकार बनकर गुज़र जाती है। याद रखिये, इस्लाम जिसको हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लेकर आए हैं उसमें इस प्रकर की वाहीयात बातों की कोई गुंजाइश नहीं है।

हज़रत सराक़ा बिन मालिक कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि:-

''क्या मैं तुमको सबसे उत्तम और अल्लाह के निकट सबसे स्वीकार्य दान क्या है बताऊं? वह तेरी बेटी है जो तेरी ओर लौटा दी गई है और तेरे अतिरिक्त उसके लिये कोई कमाने वाला नहीं है।'' (सुनन इब्ने माजा)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी उम्मत को यह बता रहे हैं कि तुम ऐसी बच्ची को जो शादी के बाद फिर किसी कारण से वापस आ गई, उसको अभागी न समझो बल्कि उसकी आवश्यकताओं को पूरी करो, तुम्हारा सम्मान के साथ उसको घर में रखना उसके जीवन की आवश्यकताओं को विवाह से पूर्व की भांति पूरा करना, उसको दुख न देना और उस पर ख़र्च करना अल्लाह के निकट उत्तम एवं अति स्वीकार्य दान है। अल्लाह के गुस्से को ठंडा करने वाला है।

मुसलमानो! क़ुरआन और अल्लाह के नबी की हदीसों से सबक़ लेना चाहिये और बेटियों को बेटों के मुक़ाबले में तुच्छ और हीन न समझना चाहिये, हो सकता है उनको घर में सम्मान देना ही कल क़यामत के दिन माता-पिता की मुक्ति का माध्य बन जाये।

❑❑